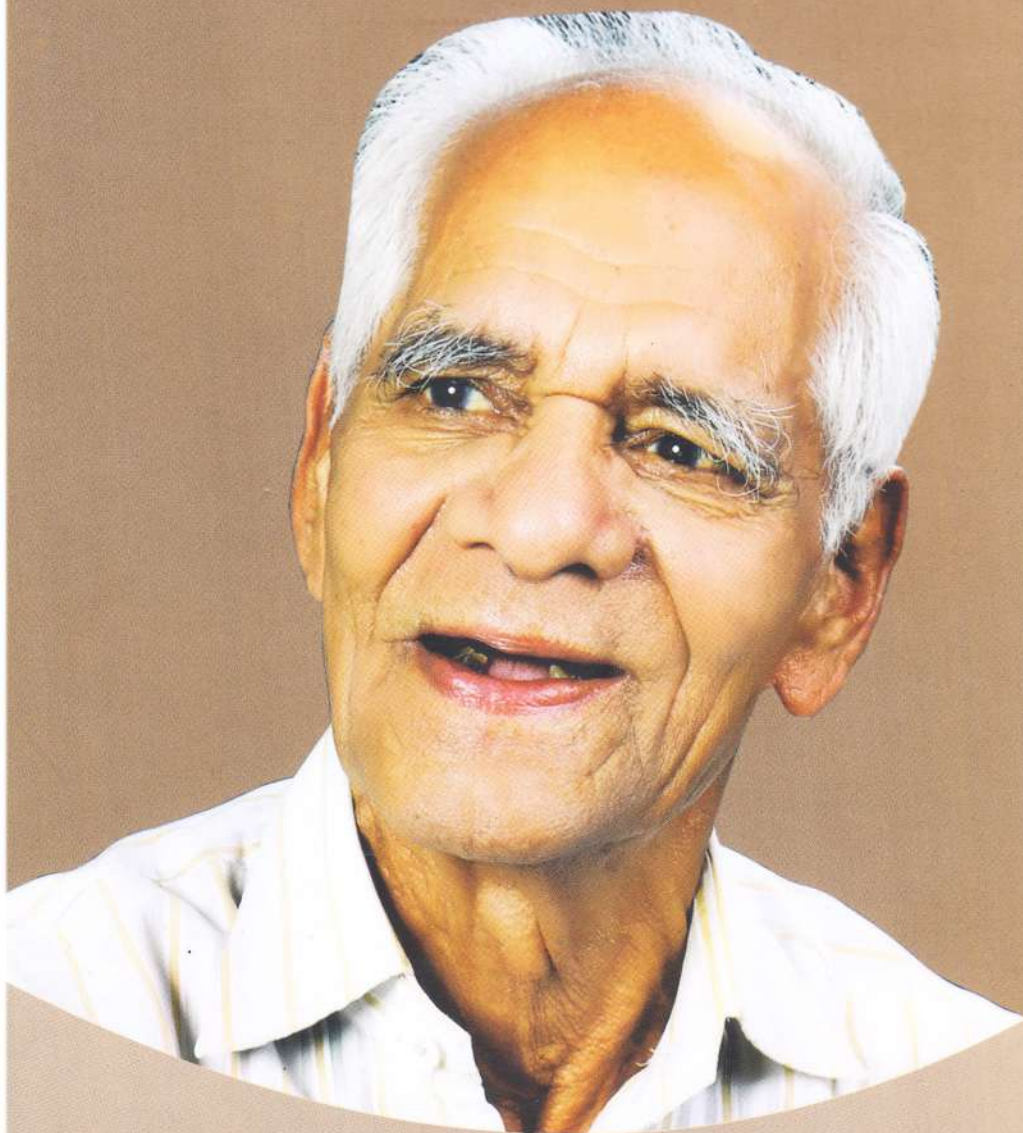


सत्य से साक्षात्कार के कवि
निर्मल चन्द निर्मल



सम्पादक

सरोज गुप्ता, लक्ष्मी पाण्डेय, घनश्याम भारती

प्रिया पुस्तक सदन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन – फोटोकापी, इलेक्ट्रानिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है।
किसी भी विवाद के लिए न्यायालय सागर ही मान्य होगा।

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN : 978-81-924872-6-7

प्रकाशक

प्रिया पुस्तक सदन

म.नं. 119, लेन नं. 4/3, करावल नगर एक्सटेंशन
दिल्ली-110094

अक्षर संयोजन

रॉयल कम्प्यूटर्स

वन वे रोड, परकोटा, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-244289, 9425452106

विशेष सहयोगी

श्यामलम् साहित्यिक संस्था, सागर

मूल्य – 850/-

SATYA SE SAKSHATKAR KE KAVI : NIRMALCHAND NIRMAL
edited by Saroj Gupta, Laxmi Panday, Ghanshyam Bharti

अपनी निर्मलता से निर्मल हैं आज तक ('गीत है ये जिन्दगी' पर एकाग्र)

आशुतोष कुमार मिश्र

गीत जिन्दगी का उदात्त आत्मविश्वास है। गीत कविता से ज्यादा अपील करते हैं। इसलिए कि गीत हमारे भीतर संस्कार के तौर पर शामिल होते हैं। बचपन से हम लोरी आदि के माध्यम से गीत सुनते आये हैं। इसलिए मनुष्य का मन गीतों में ज्यादा रमता है। वैसे भी गीत आदमी के शैशवावस्था को पुनर्जीवित करता है। शैशवावस्था निष्कलंक और पवित्र होता है। उस उम्र में सब कुछ प्रेम से ही संचालित होता है या बंधता है। इसीलिए शैशवावस्था प्रेम के नियम को स्थापित करता है। प्रेम के बिना क्रांति बिध्वंसक और क्रांतिकारी हत्यारे बन सकते हैं। गीत की इसी महती भूमिका के चलते अभिव्यक्ति के तमाम साधनों के बावजूद गीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'फार्म' के रूप में हमारे सामने आता है।

वैसे भी जिन्दगी और गीत में बड़ा नजदीक का रिश्ता है। जिन्दगी जब समरस होकर सबके भावों को धारण कर ले तब वह गीत बन जाती है और जब गीत उदात्तता की उच्च मनोभूमि को छू ले तब वह जिन्दगी बन जाता है। गीत का जिन्दगी में और जिन्दगी का गीत में रुपान्तरण की इस प्रक्रिया को निर्मल चंद 'निर्मल' ने अपने काव्य संग्रह 'गीत है ये जिन्दगी' में साकार किया है। निर्मल चंद 'निर्मल' हमारे समय के एक ख्यातिलब्ध कवि हैं। उनके अब तक 16 काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। निर्मल जी साहित्य जगत में अपनी रचनाओं के साथ अपनी सार्थक उपस्थिति के लिए जाने जाते हैं। निर्मल चंद 'निर्मल' की कविताओं में साफगोई, ईमानदारी, लहजे की सख्ती, नर्म जज्बात और अदबी तथा इल्मी फ़न अपनी पूरी गरिमा के साथ मौजूद हैं। निर्मल जी की कविताएं बिना किसी नक्काशी के आकर्षक हैं, बिना किसी कृत्रिमता के असरदार हैं। जैसे जीवन विविधवर्णी और विविधरंगी है उसी प्रकार जीवन से उठाए और लिए गये विषय भी विविधवर्णी और विविधरंगी हैं। इसका उदाहरण है उनकी महत्वपूर्ण रचना

आशुतोष